नालंदा खुला विश्वविद्यालय - ई लर्निंग सामग्री

पाठ्यक्रम- एमजेएमसी पार्ट-01, पेपर- 02- माध्यमों का विकास

प्रमोद पांडेय, काउंसलर, पत्रकारिता व जनसंचार

हिंदी पत्रकारिता का इतिहास- काल विभाजन

आमुखः

बंगाल हिंदी पत्रकारिता की आदिभूमि है और वहां के समाजसुधारक राजाराम मोहन राय भारतीय पत्रकारिता के पितृपुरुष। समाज सुधार के कार्य में उन्होंने पत्रकारिता को साधन बनाया और जनजागरूकता पैदा की। कई पत्र-पत्रिकाओं के शुरुआत का श्रेय राजाराम मोहन राय का ही है। इनमें सबसे प्रमुख था- 1816 में प्रकाशित बंगाल गजट जो किसी भी भारतीय भाषा का पहला समाचार पत्र माना जाता है। इसके संपादन का दायित्व गंगाधर भट्टाचार्य ने निभाया। पंडित जुगल किशोर शुक्ल के संपादन में निकलने वाले उदंत मार्तंड को हिंदी का पहला समाचार पत्र माना जाता है। यह कोलकाता से 30 मई 1826 को साप्ताहिक के रूप में प्रकाशित होना शुरू हुआ। इसी कारण 30 मई को हिंदी पत्रकारिता दिवस भी मनाया जाता है।

हिंदी पत्रकारिता काल विभाजनः

काल विभाजन की दृष्टि से हिंदी पत्रकारिता को विभिन्न कालखंडों में विभाजित करने की कोशिश कई विद्वानों ने की है। लेकिन सर्वसम्मति अबतक नहीं बन पाई है। कालविभाजन किया तो किसी ने किसी और आधार पर। इनमें कुछ प्रमुख काल विभाजन इस प्रकार हैं।

जिस काल विभाजन पर प्रायः कोई विवाद नहीं है उसके मुताबिक हिंदी पत्रकारिता को हम निम्न कालखंड में विभाजित कर सकते हैं।

- हिंदी पत्रकारिता का उद्भव- 1826 से 1867
- हिंदी पत्रकारिता का विकास- 1867 से 1900 (इसे भारतेंदु युग भी कहा जाता है।)
- हिंदी पत्रकारिता का उत्थान- 1900 से 1947- कुछ विद्वान इस कालखंड को तिलक युग (1900-1920) और गांधी युग (1920-1947) में भी विभक्त करते हैं।
- स्वातंत्र्योत्तर पत्रकारिता- 1947 से अबतक

इन कालखंडों पर विचार करें तो दिखता है कि उदंत मार्तंड का प्रकाशन हिंदी पत्रकारिता के इतिहास का महत्वपूर्ण प्रस्थानबिंदु है। आर्थिक अभाव और अन्य कारणों से यह साप्ताहिक तो ज्यादा नहीं चल पाया लेकिन इसने ऐसी आधारभूमि तैयार की जिसपर हिंदी पत्रकारिता अबतक फल-फूल रही है। राजाराम मोहन राय के नेतृत्व में 10 मई 1929 को बंगदूत

का प्रकाशन हिंदी पत्रकारिता के उद्भव काल की अन्य महत्वपूर्ण परिघटना है। बंगदूत एक साथ बांग्ला, फारसी, अंग्रेजी तथा हिंदी में प्रकाशित हुआ।

हिंदी पत्रकारिता के विकास में 1900 ई. का महत्वपूर्ण योगदान है। यह सरस्वती पत्रिका के प्रारंभ का साल है जो अपने समय का सबसे महत्वपूर्ण प्रकाशन माना गया। इसका प्रकाशन बंगाली भद्रलोक के बाबू चिंतामणि घोष ने शुरू किया था और नागरी प्रचारिणी सभा का अनुमोदन इसे प्राप्त था। इसका संपादक मंडल ख्यात विद्वानों की मंडली था जिसमें बाबू राधाकृष्ण दास, बाबू कार्तिका प्रसाद खत्री, जगन्नाथ रत्नाकर, किशोरीदास गोस्वामी और बाबू श्यामसुंदर दास थे।

सरस्वती का मुख्य उद्देश्य हिंदी के शब्द भंडार में अभिवृद्धि के साथ अपनी विशिष्ट सामग्री से हिंदी साहित्य जगत को अनुप्राणित करना रहा। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 1903 में सरस्वती के संपादन का दायित्व लिया और इसके बाद तो सरस्वती और आचार्यजी जैसे एक-दूसरे के पर्यायवाची हो गए।

स्वतंत्रता से पूर्व का यह काल हिंदी पत्रकारिता के विकास के साथ जन जागृति के दृष्टिकोण से बेहद महत्वपूर्ण रहा। आर्थिक अभाव और अंग्रेज सरकार की दमनकारी नीति के इस काल में हिंदी पत्रकारिता ने कई महत्वपूर्ण पड़ाव तय किए। एक तरफ पत्र-पत्रिकाओं पर सरकार की कोपदृष्टि, संपादकों पर अत्याचार और अन्य दमनकारी नीतियों के

कारण पत्रकारिता दृढ़ संकल्प का पर्याय बनी वहीं इस काल में बाल गंगाधर तिलक और गांधी जैसे व्यक्तित्वों ने भारत में भाषाई पत्रकारिता को अकल्पनीय मजबूती दी। राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बने समाचार पत्रों ने इस काल में जो प्रतिष्ठा अर्जित की उसका कोई सानी नहीं दिखता। आज के महत्वपूर्ण और सर्वाधिक चर्चित पत्र समूहों में से अधिकतर की स्थापना इसी कालखंड में हुई। यह समय पत्रकारिता के जरिए जनजागृति का स्वर्णिम युग था। यह संकल्पों का भी समय था। जेल की यातनाएं न संपादकों-पत्रकारों को डिगा सकीं न अंग्रेजों की दमननीति आमलोगों को ही पत्रों से परांगमुख कर पाई। उस समय वितरण की व्यवस्था कमजोर थी फिर भी लोगों को पत्रिकाओं-समाचार पत्रों का इंतजार रहता था।

आजादी के बाद हिंदी पत्रकारिता का विकास तेज गति से हुआ। मशीनीकरण और साक्षरता में वृद्धि के कारण प्रसार संख्या में तेजी से बढ़ोतरी ने आर्थिक उन्नति और पत्रकार कर्म के प्रति लोगों में रुचि जगाई लेकिन यह भी मानना पड़ेगा कि विकास के बावजूद पत्रकारिता के उद्देश्यों का क्षरण भी इस कालखंड में तेजी से हुआ। इस अवधि में पत्रकारिता ने आपातकाल का दमनचक्र सहा। बाजार का प्रभाव देखा। बाजारवाद और आर्थिक उदारीकरण के प्रभाव से कभी मिशन रही पत्रकारिता आज पत्र मालिकों के व्यावसायिक हितों की रक्षा के साधन बन गए हैं। संपादक पहले मालिक सरीखी भूमिका में था, आज इस पद

की गरिमा कई कारणों से धूमिल हुई है और पत्रकारिता मिशन की जगह व्यवसाय बन गई है। कभी दूसरों के अधिकारों की आवाज बनने वाला पत्रकार समूह आज खुद की जमीन तलाशने में असमर्थ पा रहा है। ध्येय और साध्य तो बदले ही, हिंदी पत्रकारिता के साधन भी बदल गए हैं।

इन विसंगतियों के बावजूद सोशल मीडिया के इस दौर में अब सिटीजन जर्नलिज्म, डिजिटल जर्नलिज्म जैसे शब्द चर्चा में आते जा रहे हैं। अखबारों की पहुंच तो बढ़ी ही, रेडियो और टेलीविजन के प्रभाव से हिंदी पट्टी में समाचारों के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ा है। कोरोना के माहौल में जब दुनिया के अधिकतर लोग अपने घरों में कैद हैं, सूचनाओं का प्रवाह लगातार हो रहा है। अन्य भाषाओं की तरह हिंदी में भी प्रचुर मात्रा में सामग्री लगातार मिल रही है। पत्रकार कर्म में जुटे लोग सूचनाओं को लेकर सतर्क और सचेष्ट हैं। इससे पत्रकारिता की मजबूती की ही झलक मिलती है। डिजिटल माध्यम के रूप में नया और मजबूत प्लेटफॉर्म आने वाले दिनों में हिंदी पत्रकारिता को नया आयाम मिलने की उम्मीद की जा सकती है। लेकिन मानना पड़ेगा कि तमाम विस्तार के बावजूद हिंदी पत्रकारिता की आत्मा विज्ञापनों की चकाचौंध में कहीं खो गई सी लगती है। यही इस युग में पत्रकारिता से जुड़ी विडंबना भी है।